

धर्मरत्न बज्जाचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH33

२० २०
कदम्बकदहनि यावक्कयथाह दनासानन्दालिगाङ्गमावा नाहिस
त्रुवावा नाहिकावकसिवा १ वायमिपह्यवजपूचो म्वा नाहो म्वा ऊ था
गिनीनिनासासुस्मकयवक्क २ फलकलहानसै सिद्धिं वा ३ वा विज्जनं मन
नूक्कलं हननाथा क्क कः पविन्ना सुधीशा म्वा कुसुमा नमा स म्वा कवि
वा विस्मययक्कुद्धिं वा ४ वा कदम्ब वक्क जि नन गो क्क न ऊ प

द्वयं संलिर्यानामि कया लाहिन कूह मात्रि नं कू यो कू स ॥ १ ॥
नृप न माद्य पाशुक न मलंद द्वि रम न न द्वि पुव विदे धी न वे ज ॥ २ ॥
रम पद मं मय स्य मा कू ॥ ३ ॥ पु वि धाय क न न्या स वृ च्छा कू श्रु कू ली स
माथो ग म कू कू चो मा कू न्या स ष द्वि वी न म्भ नी म कू ॥ ४ ॥ न न म द नू व व ज
नाय नि न कू नू ल यो ग कू स म म कू ॥ ५ ॥ ग र व ॥ ६ ॥ स वि मि ष्ट ॥ ७ ॥ सि व

ग म न व कि न न कू न कू ॥ ८ ॥ ग म कू जि न द द य द द यं व कू भि सि कू ॥
क स म हि लि र व म कू ह म कू ली म्भ र कू य ग ल क या स म हि लि र व ॥
९ ॥ ग व कू स्य वा कू ल र ग पु चो ह न य म्भि मा कि दि द र म्भ स त्व सि का न
हि लि र व कू म न वा म रु स ॥ १० ॥ ग म्भ कू मा व कू द वी म्भ नि म्भ म
मा कू न र्भ वू द्वा र प त्रि मा ष य दि धा ना कू ॥ ११ ॥ व लानि नि यो ॥ १२ ॥

मदनुसपु योमिवि विष्णु न स्या विद वं नमस्तु नूपा या शरु श्रु हा कं न क
 : प म र आ धि ४ स का म गुर व र्मा १२ वा वि वि र ध च ले ४ स म द न नू प ह न
 : प च र ह न नि प न य ४ गी न वा य नू ह ४ प द क्षि ण य न मि नू मि हि श्र
 म १३ वा प मि दि स य मि प रू य मि म्मा स वा मि र धा द न म्मा मि न न कू
 यो य र धा क पू जा वि धि म म्मा ४ सि धि मा का न न १ ४ वा रू मि न ल

२

हान सं सि द्धो वा क पू जा वि धि ४ वा १ अ प रू न वा क च न वि धि नू नू व
 नू र ण मि मि मा नि म य कू वा स ह द या रू गु वि म्भ धा या त्प र्वा दि का न
 वी म १ ५ वा स च्चा सि नू न व रू ख न क न नि क ना या रू स फा र्क का नि
 क लिं स च्चो रू रु नी रू न द म न रू ण मि रु नी स वा द रू वि ज्ञा र्म
 वा म द रू क म ल म मि सि रू न क पू रू च्च ज्ञा या का ला द रू ली का

ल्यायनिगकभिन्नसंभूकमूडाथहलां १८॥ मूडुली मूडिनाझीम
खदलदमूऊंखादगुमूकनादीं सद्यवाइं किनाखाविनभुहगमन
कोषमूलमनाकारिमानदोसाननागाविविघनसयूनामइयथोक्
नृत्तामूडाषमूडिनीगीययगकवसनांषाकभर्थावनांगीमना
गनराहानाकषादिविधिश्यागिवहल्वविषानविनर्मायस्वस्तिव

मालिकाहिमूरुंभुगकमं कदकन्याया १८॥ मदनूविषयद्विधाकोः
किंनूटगिनिगकननुमच्चकंरयागुकोमिदध्यायाइकंजाहल्यमानस
रुता १९॥ कलिन्नमिवाकिवगमनिवागनि४कम्यदोयानिवदीय
डावयइनुमूरुवचकंवाक्यवदमूकमानकमसवनम २०॥
कायययस्वलावयनमंहरुजात्मकंरुगवापिहृनदामिहसाका

कमिष्टपरम्परायश्चात्मस्वरूपश्चात्मा २१ वायुमिदिवसंयुक्तिं संश्रयथा क
मम्बाविरावयश्चदममवयावलिद्विनिमिरुं नायदिदह्वयमवका
२२ वायुयन्त्रदीप्तिनयानुवमनायदाहवयकमिदमिहाविम
कयावयथादिहमनवदनामदाहवन्निद्विनद्विनवकनी २३ वा
युमादिनानीयमेवादिनानीयद्वेननिनक्षमिरमाचनरश्मिनाम

वायुमवाविननुरुनायस्वप्रविनाद्यानवमाद्यसिद्धि २४ वाद्य
मिद्विनिमिरुं पिहवनगिनिनुअवकमूलादीनानिवसन्नलन
क्रमथागमऊर्ध्वसुधीशक्रयोक्त २५ वासिद्धावसुधादीनीहवमि
लयाकुरुनक्रमकशरव्यामिमदोगगनार्यपरास्वनज्ञानमार्गस
२६ वाजानीयाकचिद्विज्ञाननुरुयवकभाविरुह्माम

नंवाय्यः १४ जा नो ह्यनात्मा ६० स्तान् नृपं वापि पत्रिय द्या ३३ वाया गह
नं मद्यः पत्य यवनं सवाध्वरः कथञ्चान्विगम्य गुनिना गुनवद्वा
हि न्न सह को ॥ ३४ ॥ किथयन्नद नूकथयत्स माध्वि पूजा मनु
वज्रया गिन्ना १४ भुञ्जान्वि न हि न मनसा ह किं विहीनस्य निष्पस्य
वा ह्ये वा विदधाति यमु पूजा देवा वक्रस्य मनु यूकस्य प्रयानि

वान्यस्य पापानि वमस्तानि ३५ वादूर्गमादा निदं वाध्वि जना ६४
यो मनेन स्थानि रुम कलि कलष क्रमा १४ पीठाना नाविम आपि ३७ वा
मा ऊपमि वक्रं मनु आत्मा ह दय निना प्रवा वा १४ सो १४ या प्रात्य स्ये सि
द्वा १४ पञ्च हि ह्यो कथा य गुमन ३८ ॥ ध्यायति यः किं न वक्रं पुनि
दिवसं यत्नं ३९ सार्धं रुनि रुन हि न वक्रं रुकु ममम वक्रं मृति ज

यमिरा इत् रावमृन्न यानं वनवाना विभनह् मिं पाभाद दिवभयना स
न सधुना निरुमस्या हवनिदयिमा विविधसु विशा या हावयभ निम
लमूखी सवक्रा ॥ ४० ॥ ०० निगल्लन स सिद्धो साभन स ४१ भिष्या न
यह विविध ॥ ॥ मनुज्ञान मरु ४ यन म विधास्य वव ऊ या गिन
इदय रिक ह् ल ह् मूपा गर सा स्या दा स्य न था क्र म मू ४१ ॥

पूवोदिनमिव चक्रं संलिखा समनूकृष्णलया यनं मयलिखत्यनिपा
टिकज्जालिका लिनरथे कार्ध ॥ ४२ ॥ ॥ साधन ग मधन ह् लाधन ग
विरुषिर्न स मायु कं वि क मा दि ना विल रवी सदहन न ल य निदी
पि ॥ ४३ ॥ ॥ रा ल ध ग र्म ह् ह् स्मि न स म म टा ह् स्मि र्म न द न ल रवी ॥
धन यू न सा धन र्म सा ह् स्मि न यू क सा ह् ग र्म ॥ ४४ ॥ ॥ अ धन यू

ॐ वामयूत २

स २ वलव्यं २

三

५५

क ७ मल हं दाधन यू क पा च मं हिकं क द नू १ ७ भ न गानि क हं च ग ह व
यु कं हं हान क हं १ ७ ८ वा च म ध रं ० ह म क ह ध न सु सं हिक क द नू १ ७
म ध रं क वा म म यू कं ० ल म ध रं य ध रं १ ७ ८ वा च क लान क ह म ध
ह मी य व ग्नी दि वा म ग ह म रं ग हं च य कं ला ध न ग हं च हं हं
न रं ० ह यं यू स रं १ ७ ८ वा च ग यू क ध न रं १ ७ ८ वा च ग हं य कं

५

अधरनीः रुधरनीः २

॥ यज्ञः ॥



शयमध्यागः त्रिकाम

चैत्र शुक्ल द्वितीये

[illegible]

१५

इयमभनिदद्यात्तरवा ऊ या वि ल वा भ्रवा ऊ १ वा वि ना म मि ४ क ल
क र ७ २ ग कू ४ ४ श्री ४ का म धू २ ४ नू न पि यु म स्ता रा क सा थ मा ना द द
मी रु वि ल ना य नु सो री स ध न न द द मि रा ऊ २ वा ४ मि म त्व ह न स
मि श्रा म ना द्वा न वि धि ॥ वा य स्मि न्न र्य पा र ग क वा ल खि यू ऊ
मि र्क वि धि ना वि धि ४ वा वा ल स्य न द्वा वि धि व दि र्वा या व द्वा न द

क ४ मि र्वा सू क न ॥ ऊ ३ वा द द्वा य या निं रु ऊ गा ४ मि लु कं स न द्वा
का य रु नि मि व ना ४ स पि सा च स द्वा ४ वा नू च वा ल क रु या लि क ना
सू ही मा ४ सिं हं य था व न च ना व लि नं रु या लो म्वा ऊ ४ वा स या य म द्वा
य द र्भे द द्वा स य ह य क रु या ग स्या सि धि नि र्यं स म हि लि खि सू न द
म ल ह न स म्भ सा नै ४ ॥ ऊ ऊ वा क स्मा रु त्मं पा र्थ्यं स र्यं स रु ना ४

पादाम्बुजं हंता मायाय पदानविधिना जायते कुरुते तदा मया श्रवणं ३ वा
 नतु हंता मायाय सिद्धि वदति न नीयां न न वदति कुरुते तदा मया श्रवणं ३ वा
 मीलनं लमकलं संपूर्णवर्जं ३ वा न नीयां न न वदति कुरुते तदा मया श्रवणं ३ वा
 प्रवक्तुं ला ४ मुद्रा धिया जालं मया मया न नीयां न न वदति कुरुते तदा मया श्रवणं ३ वा
 प्रवक्तुं ला ४ मुद्रा धिया जालं मया मया न नीयां न न वदति कुरुते तदा मया श्रवणं ३ वा

कति रियं समाधि वनापादा धर्मरत्न ब्रह्माचार्य सुरत श्री महाबिहार